International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 2, Mar.-Apr,, 2025

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासनकाल में भारत - बांग्लादेश संबंध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

गंगोत्री कुमारी

राजनीति विज्ञान विभाग, कुमाऊँ यूनिवर्सिटी नैनीताल 263001
उत्तराखण्ड, (भारत)

सार

यह लेख प्रधानमंत्री मोदी के शासनकाल में भारत – बांग्लादेश के मध्य संबंधों का विश्लेषण करता है। प्रधानमंत्री मोदी अपने लगातार तीसरे कार्यकाल में प्रवेश कर चुके हैं। साथ ही हाल ही में बांग्लादेश की समकक्ष शेख हसीना भी ऐतिहासिक रूप से लगातार चौथी बार सत्ता में बनी हुई हैं। हालांकि यह कार्यकाल उनका पूरा नहीं हो पाया है। दोनों ने अपने पूर्व के शासनकालों में संबंधों में अच्छी बढ.त दर्ज की है। चाहे वो एल.बी.ए. (लैण्ड बाऊंड्री एग्रीमेंट) हो या समुद्री सीमा परिसीमन या फिर कनेक्टिविटी हो या आर्थिक संबंध, सभी में मजबूती देखी गई है, किन्तु दूसरी तरफ संबंधों में अभी भी कई ऐसी चुनौतियाँ हैं जो अपना फन फैलाए खड.ी हैं। जिनमें जल विवाद, चीन फैक्टर, आतंकवाद, सुरक्षा चिन्ताएँ तथा अवैध प्रवासन जैसी मुख्य चुनौतियाँ हैं जिन्होंने संबंधों को कमजोर करने का काम किया है। यह शोध पत्र मुख्य रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में भारत – बांग्लादेश संबंधों में श्री मोदी की भूमिका तथा संबंधों में श्री मोदी के प्रभाव के साथ – साथ संबंधों को एक नई ऊँचाई पर लाने के लिए मोदी के प्रयासों को विश्लेषण करता है। वर्तमान युग दोनों देशों के संबंधों का स्वर्ण युग माना जा रहा है। किन्तु बांग्लादेश के निर्माण में भारत के अप्रतिम योगदान के बावजजूद दोनों देशों के मध्य तनाव अब भी बना हुआ है। शोध कार्य इन तनावपूर्ण मुद्दों की जांच करता है।

मुख्य शब्द (की वर्ड्स):–कनेक्टिविटी, आर्थिक संबंध, जल विवाद, सुरक्षा चिन्ताएँ, चीन फैक्टर, अवैध प्रवास, चुनौतियाँ, स्वर्ण युग

प्रस्तावना

वर्ष 1971 वह वर्ष था जब भारत को एक स्वतंत्र, संप्रभु तथा स्वायत पड़ोसी के रूप में मित्र स्वरूप बांग्लादेश मिला। यह वर्ष भारत और बांग्लादेश दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। जहां एक तरफ भारत को एक मित्र मिला वहीं इस वर्ष बांग्लादेश भी नव–निर्मित स्वतंत्र राष्ट्र बनने की खुशी में फुला नहीं समा रहा था। भारत ही वह पहला राज्य था जिसने बांग्लादेश को एक अलग और स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में मान्यता प्रदान की। इसके साथ ही भारत ने ही सर्वप्रथम नवनिर्मित स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये। बांग्लादेश भारत के लिए जितना महत्व रखता है उतना ही भारत भी बांग्लादेश के लिए अपना ही महत्व रखता है। दोनों देशों के लिए एक दुसरे के महत्व को समझते हुए संबंधों को मजबूत बनाना दोनों ही देशों के लिए अति महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक भी हो जाता है। एक ओर जहां बांग्लादेश तीन ओर से भारत से घिरा है. दूसरी ओर भारत को भी पूर्वोत्तर राज्यों से जोड़ने के लिए एक सेतू की भांति कार्य भी करता है। इस तरह दोनों ही देशों की एक–दूसरे पर निर्भरता इस बात से पूरी तरह झलकती हैं। देखा जाए तो भारत और बांग्लादेश के मध्य द्विपक्षीय संबंधों का आरम्भ बांग्लादेश के निर्माण से भी पहले शुरू हो चुका था जब भारत ने बांग्लादेश को एक स्वतंत्र संप्रभु तथा स्वायंत राष्ट्र के निर्माण में अपना पूर्ण समर्थन प्रदान किया। इसी कारण से दोनों देशों के बीच एक भावनात्मक संबंध भी बना हुआ है। भारत व बांग्लादेश के मध्य एक मिली जुली सभ्यता और संस्कृति है, जो विशेषकर पश्चिम बंगाल से मेल खाती है तथा सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों के अतिरिक्त एक साझा इतिहास, एक साझी विरासत, भाषा एवं साहित्य, संगीत, कला आदि भी ऐसे विषय है जो दोनों देशों को एक सूत्र में बांधते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि भारत के प्रयासों द्वारा 1971 में इस स्वतंत्र राष्ट्र को संप्रभुता प्राप्त हुई तथा ये भारत के ही प्रयास थे कि बांग्लादेश को 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता प्राप्त हुई। भारत प्रबल भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और व्यापारिक संबंधों के कारण बांग्लादेश के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है।

भारत और बांग्लादेश के मध्य लोगों से लोगों के बीच व्यापक संपर्क के साथ–साथ उच्च–स्तरीय आदान–प्रदान, द्विपक्षीय दौरे और बैठकें नियमित रूप से होती रहती हैं। जनवरी 2010 में प्रधानमंत्री शेख हसीना की भारत यात्रा ने दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मार्च 2013 में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने राष्ट्रपति पद संभालने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा बांग्लादेश की विदेश यात्रा की जो कि इस बात को सही प्रमाणित करती है कि भारत बांग्लादेश के साथ संबंधों को सर्वोच्च महत्व देता है जो कि समानता, साझेदारी और पारस्परिक विकास के सिद्धांतों पर आधारित है। इसी तरह जून 2014 में विदेश मंत्री के रूप में सुषमा स्वराज की बांग्लादेश की पहली ''स्टैण्ड अलोन''[1] यात्रा ने भारत और बांग्लादेश के बीच मैत्रीपूर्ण और घनिष्ठ संबंधों को और गति प्रदान की पिछले चार दशकों से अधिक समय में दोनों देशों ने अपने राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना जारी रखा है और द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक संस्थागत ढांचा बनाया है। दोनों देश 54 नदियों को साझा करते हैं जिनमें से गंगा के पानी के बंटवारे के लिए एक संधि पहले से ही अस्तित्त्व में है और दोनों पक्ष अन्य साझी नदियों के पानी के बंटवारे के लिए समझौतों को शीघ्र अन्तिम रूप देने के लिए काम कर रहे हैं। दोनों देश सम्पूर्ण सुन्दरबन पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में भी सहयोग कर रहे हैं, जो एक साझी जैव विविधता विरासत है।[2]

भारत बांग्लादेश के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों को शुरू से ही महत्व देता आया है तथा द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए भी बल देता आया है। भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के तहत बांग्लादेश एक महत्वपूर्ण भागीदार देश है। दोनों देशों के मध्य सहयोग व्यापार और वाणिज्य, बिजली और ऊर्जा, परिवहन और कनेक्टिविटी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी रक्षा एवं सुरक्षा, समुद्री मामले, जलवायु परिवर्तन और सत्त विकास सहित सभी क्षेत्रों में है।[3]

भारत और बांग्लादेश के मध्य एक सहयोगपूर्ण संबंध होने के साथ–साथ कई ऐसे मुद्दे हैं जो दोनों देशों के बीच विवाद का कारण बने हुऐ हैं जिनमें अवैध प्रवासन, गैर टैरिफ बाधाएँ, सीमा विवाद, नदी जल बंटवारा, आतंकवाद तथा चीन कारक आदि ऐसे मुद्दे हैं, जिनका अब तक कोई उचित समाधान नही हो पाया है। भारत और बांग्लादेश में अभी कई संदेह मौजूद हैं। जिनमें से एक है– बांग्लादेश का यह मानना है कि भारत द्वारा उसे उतना सहयोग नहीं दिया जाता जितना वह बांग्लादेश से लाभ प्राप्त करना चाहता है। बांग्लादेश का भारत के प्रति इस प्रकार का दृष्टिकोण रखना अति चिन्ता जनक है। इसके अलावा चीन कारक भी एक ऐसा मसला है जो द्विपक्षीय संबंधों को कमजोर कर रहा है भारत बांग्लादेश के मध्य संबंधों के प्रत्येक पहलुओं को समझाने के लिए बांग्लादेश की भौगोलिक और ऐतिहासिक जानकारी का पता लगाना आवश्यक है।

बांग्लादेशः एक संक्षिप्त परिचय

बांग्लादेश बंगाल की खाड़ी द्वारा निर्मित दुनिया के सबसे बड़े डेल्टा की आधारशिला से बना तथा उत्तर में तिब्बती द्रव्यमान के कारण यह भारतीय उपमहाद्वीप तथा दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के मध्य एक तुलनात्मक रूप से संकीर्ण भूमि पुल है। इसलिए दक्षिण एशिया में इसकी रणनीतिक स्थिति है। बांग्लादेश की मौगोलिक स्थिति की बात की जाए तो यह 20°35′ उत्तरी अक्षाश से 26°75′ उत्तरी अक्षाश तक तथा 88°03′ पूर्वी देशान्तर से 92°75श पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है तथा इसका क्षेत्रफल 144,999 वर्ग किमी० और भूमि क्षेत्र 133,910 वर्ग किमी० है जिसमें से कृषि योग्य भूमि 59.39 प्रतिशत है।[4] बांग्लादेश की 4095.70 लम्बी भूमि सीमा है तथा 193 किमी. म्यांमार के साथ है इसका समुद्री तट 500 किमी0 है।[5] गंगा–ब्रह्मपुत्र के मुहाने पर स्थित इस नव निर्मित राष्ट्र का नाम वंगा से विकसित होकर बाग्ला या बंगाल हो गया जिसे आगे चलकर बांग्लादेश कहा जाने लगा।[6] बांग्लादेश दुनिया के सबसे बड़े डेल्टा पर स्थित है जिसके कारण इसके मैदानी क्षेत्रों से होकर कई बड़ी नदियाँ और नाले बहते हैं, जिनमें प्रमुख नदियाँ पद्मा (गंगा), बह्मपुत्र, मेघना, कर्णफुली, करोत्या आदि है।[7]

बांग्लादेश विविध संस्कृतियों से समृद्ध एक वह देश है जिसकी सम्पूर्ण विरासत इसकी वास्तुकला, नृत्य, साहित्य, संगीत, चित्रकला और कपड़ो में पूरी तरह से प्रतिबिंधित होती है। बांग्लादेश में मुख्य तौर पर तीन प्रमुख धर्म है– इस्लाम, हिन्दू और बौद्ध धर्म है जिनका इसकी संस्कृति और इतिहास पर बहुत गहरा प्रभाव है। मध्यकाल में चंडी दास, दौलत काजी और अलाओल जैसे लोकप्रिय कवि हुए हैं जिन्होनें बंगाली साहित्य को विकसित करने में मुख्य भूमिका निभाई। बांग्लादेश का पारंपरिक संगीत भारतीय उपमहाद्वीप से काफी हद तक मेल खाता है।[8]

बांग्लादेश दो शब्दों बाग्ला अर्थात् (बंगाली) और देश अर्थात् भूमि से मिलकर बना है जिसका अर्थ हुआ बंगालियों की भूमि या देश। बंगाल के चौदहवें सुल्तान शम्सुधीन इलियास शाह ने अपने राज्य का नाम 'बांग्ला' और उसके निवासियों को 'बंगाली कहा।[9] बंगाल के मूल निवासी ऑस्ट्रिक मूल के थे जिन्हें जातीय रूप से वैदिक या कोबली कहा जाता है तथा 2000–1500 ईसा पूर्व के आसपास उत्तर–पश्चिम के आर्य आक्रमणों से काफी पहले से ही बंगाल में मौजूद थे। प्रारंभिक आर्यों ने वैदिक साहित्य में जनजातियों को किकट, व्रात्य या निशाद कहा है। इन मूल निवासियों की नस्लीय उप–जनजाति आज भी जीवित है। जिन्हें सबारा, डोम, चांडाल, पुलिंदा कोला और हादी के नाम से जाना जाता है। द्रविड़ मंगोलियाई जनजातियों और अंत में आर्य नस्लें भी थे जो बंगाली जाति बनाने के लिए एक साथ आये। द्रविड तथा मंगोलियाई जातियों के मध्य अन्तर जातीय वैवाहिक सम्बन्ध भी थे। पश्चिम से आर्य जाति का अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर प्रवासन हुआ।[10] ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो बंगाल के दर्ज इतिहास का मध्य काल 280 ई0 से गुप्त साम्राज्यसे शुरू हुआ। गुप्त वंश ने पश्चिमी भारत तथा वर्तमान उडीसा, बिहार व असम के कुछ हिस्सो वाले क्षेत्र तथा बंगाल पर भी शासन किया। इस काल में बंगाल दो राज्यों कपुष्करणा व सामतंता में विभाजत था। चन्द्रगुप्त द्वितीय को इसे जीतने के लिए इंगा राजाओं को हराना पड़ा। छटी शताब्दी तक आते–आते बंगाल पूर्वी बंगाल (वंगा) तथा पश्चिमी (गौड़ा) में विभाजित हो चुका था।[11] बंगाल 750 ई० में गौर में हुए चुनाव द्वारा बंगाल का पहला स्वंतत्र बौद्ध राजा गोपाल के नियंन्त्रण में आ गया। इसने बौद्धपाल राजवंश की स्थापना की जो चार शताब्दी 1120 ई० तक चला। इस राजवंश ने बंगाल के 'सोनार बांग्ला' की शुरुआत की क्योंकि यह क्षेत्र सांस्कृतिक और धार्मिक आदान–प्रदान और व्यापार और वाणिज्य के लिए पश्चिमी पूर्वी भारत के लिए पुल बन गया।[12]

बदलते समय के साथ–साथ बांग्लादेश की भूमि पर मुस्लिम साम्राज्य का उदय भी हुआ। बांग्लादेश में इस्लाम का प्रसार 8वीं शताब्दी में शुरू हुआ जब अरब के व्यापारी चटगांव के तट पर पहुँचे सूफी संतो ने देश में इस्लाम के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निवार्ह किया। इसके बाद 13वीं शताब्दी में, सूफी संत शाह जलाल सिलहट पहुंचे और पूरे क्षेत्र में इस्लाम की शिक्षाओं का प्रसार किया।[13] इसी समय इख्तियारुद्दीन गुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी द्वारा विजय प्राप्त करने के बाद से इस्लाम को बंगाल में सरकारी समर्थन प्राप्त हुआ उन्होनें मुस्लमानों के लिए संस्कृत्ति के विकास की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विभिन्न स्थानों पर मस्जिदें और मदरसों की स्थापना की।[14]

बंगाल जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत आया तो इसने कई चुनौतियों का सामना किया जिनमें मुख्य रूप से अकाल, बाढ़, सूखा और चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाएँ थी। 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश सरकार ने कंपनी से नियंत्रण अपने हाथ लिया तो उड़ीसा तथा बिहार बंगाल से अलग हो गए इन प्रान्तो को अलग–अलग गवनरों के अधीन कर दिया गया। बंगाल ब्रिटिश मिलों को कपास और जूट के आपूर्तिकर्ता के रूप में अपने आर्थिक महत्व के कारण एक महत्वपूर्ण प्रांत बन गया। बंगाल में सबसे बड़ा संकट 1905 ई0 में आया जब लार्ड कर्जन द्वारा संम्पूर्ण बंगाल प्रांत को दो भागों (पूर्व तथा पश्चिम) में विभाजित किया गया। यह बंगाल के लिए बहुत पीड़ादायी समय था। 20वीं सदी की शुरूआत में भारतीय उपमहाद्वीप की स्वतंत्रता ने इस संपूर्ण क्षेत्र में खुशी ही लहर दौड़ा दी। किन्तु यह आजादी इस उपमहाद्वीपीय क्षेत्र के विभाजन से फीकी पड़ गयी। भारत धार्मिक आधार पर दो राष्ट्रों में भारत तथा पंजाब व बंगाल के प्रांतो को धार्मिक अधार पर पाकिस्तान के साथ विभाजित कर दिया गया।[15] इस प्रकार विभाजन के पश्चात पाकिस्तान दो भागों में विभाजित था पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) तथा पश्चिमी पाकिस्तान। इन दोनों में धर्म को धर्म बाकि को समानता नहीं थी। पूर्वी पाकिस्तान की के प्रति रवैया भी ठीक न था पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा उर्दू को राष्ट्रीय भाष के रूप में घोषना करने के पश्चात् पूर्वी पाकिस्तान के छात्रों और बुद्धिजीवियों ने इस निर्णय पर हिसंक प्रतिक्रिया व्यक्त की क्योकि वे बांग्ला (बंगाली) को राज्य भाषा के रूप में चाहते थे।[16]

इस प्रकार बांग्लादेश कई उतार चढ़ावों से एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में आया है। इसकी विस्तारपूर्वक चर्चा अध्याय दो में की गई है।

वर्तमान परिदृश्य में बांग्लादेश का महत्व–

बांग्लादेश के नवनिर्मित राष्ट्र के रूप में आर्विभाव होने पर भारतीय उपमहाद्वीप यह आशा करता है कि यह नवनिर्मित राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक व समाजवादी होगा। भारत का अपने सीमावर्ती राज्यों में शांति तथा मधुर संबंध स्थापित करना आवश्यक है। इसी प्रकार बांग्लादेश जो कि भारतीय उपमहाक्षेत्र से तीन ओर से घिरा है, से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है क्योंकि भारत के एक तरफ उत्तर में एक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा रखने वाला चीन है तो दूसरी तरफ पश्चिम में पाकिस्तान है। यह दोनों ही मिलकर भारत में आंतरिक अशांति और अराजकता की स्थिति उत्पन्न करना चाहते हैं जिससे भारत का विकास न हो सके तथा भारत की शक्ति क्षीण हो जाए। भारत और बांग्लादेश की भौगोलिक स्थिति दोनों की एकता अखण्डता और संप्रभुत्ता की रक्षा तथा आर्थिक विकास के लिए ही आवश्यक नहीं है अपितु दोनों देशों के मध्य सुदृढ़ एवं मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए ही आवश्यक है।[17] बांग्लादेश बंगाल की खाड़ी के शीर्ष पर स्थित है जो दुनिया की सबसे बड़ी नदी घाटियों में से एक है। यह भारत तथा म्यांमार के साथ भूमि तथा समुद्री सीमाओं को भी साझा करता है। इस कारण यह दक्षिण की ओर से दक्षिण पूर्व एशिया का एक प्रमुख प्रवेश द्वार माना जाता है। बंगाल डेल्टा भारत के पूर्वोत्तरी क्षेत्र तथा बांग्लादेश को एक साथ जोड़ता है जिस कारण यह एक साझा ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंधों के साथ एक उपक्षेत्र बनाता है। कई शताब्दियों तक बांग्लादेश बंगाल की खाड़ी का वह केन्द्र था जो भारत तथा चीन के बीच 'समुद्री राजमार्ग' के रूप में कार्य करता था।[18]

बांग्लादेश एक ऐसा राज्य है जिसका भारतीय उपमहाक्षेत्र के लिए अपार महत्त्व है क्योंकि इसकी भूगोलीय स्थिति ऐसी है कि इसका महत्व भारत जैसे विशाल राष्ट्र के लिए कम आंकना मुश्किल ही होगा।

पूर्वोत्तर भारतः सुरक्षा तथा कनेक्टिविटी

बांग्लादेश और पूर्वोत्तर राज्यों के मध्य भू–रणनीतिक और भू–आर्थिक विचारों के महत्व में दोनों देशों के बीच संबंधों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बांग्लादेश पूर्वोत्तर राज्यों के साथ 1879 किमी० लम्बी सीमा साझा करता है जिसमें से त्रिपुरा 856 किमी०, मेघालय 443 किमी0, मिजोरम 378 किमी० तथा सीमा 262 किमी० सीमा साझा करते हैं।[19] किसी भी देश के लिए उसके निकटतम पडोसी देशों के साथ कनेक्टिविटी सबसे अधिक मायने रखती है। भारतीय पूर्वोत्तर क्षेत्र (NER), पूर्वी अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को साझा करता है तथा दक्षिण एशियाई देशों के साथ एक मजबूत कनेक्टिविटी बनाने की व्यापक क्षमता रखता है।[20] पूर्वोत्तर क्षेत्र को प्रकृति ने संसाधनों जैसे जैव विवधता जलीय ऊर्जा, प्राकृतिक तेल व गैस, दुर्लभ वनस्पतियों, जड़ी बुटियाँ, फल सब्जियाँ, कोयला, चुना–पत्थर तथा वन संपदा से समृद्ध किया है। यहां पर बारहमासी ब्रह्मपुत्र नदी भी है जो ऊर्जा, सिंचाई और परिवहन में बहुत बड़ा स्थान रखती है। नदी घाटी की उपजाऊ मिट्टी दुर्लभ वन तथा वन उत्पादों को उगाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। बांग्लादेश की पूर्वोत्तर भारत से निकटता दोनों के बीच व्यापार संबंधों से लाभ होगा।[21]

पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा हो और बांग्लादेश का जिक्र न आए ऐसा संभव नही हो सकता है। पूर्वोत्तर भारत सम्पूर्ण भारत से भौगोलिक रूप से वंचित होने के कारण इस क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत बांग्लादेश को निकटतम भागीदार के रूप में देखता है। इस क्रम में बांग्लादेश ने भारत विद्रोही संगठनों से निपटने में महत्वपूर्ण कदम उठायें है। दोनों देशों के मध्य सुरक्षा तथा आपसी सहयोग प्रदान करता है। दोनों देशों के मध्य सुरक्षा तथा आपसी विश्वास को मजबूत करने के लिए जनवरी 2013 में प्रत्यर्पण संधि भी है।[22] बांग्लादेश असम के लिए एक महत्वपूर्ण भू–रणनीतिक स्थान स्थित है। इस रणनीतिक स्थिति के कारण दोनों के मध्य व्यापार परिवहन, वाणिज्य और संपर्क के कई अवसर भी है। इसके अलावा बांग्लादेश दक्षिण पूर्व एशिया के लिए भारत के पुल के रूप में करता है।

दक्षिण एशिया को मजबूत बनाने के लिए एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में बांग्लादेश की भूमिका–

दक्षिण एशिया विश्व में अपना एक अलग महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रहा है तथा अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। इस क्षेत्र में अन्तर क्षेत्रीय संबंध सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक कारकों पर निर्भर करते हैं। पिछले 50 वर्षों से अधिक समय से दक्षिण एशियाई देशों की राजनीतिक गतिशीलता क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत भू–राजनीतिक निर्माण और आर्थिक स्थान के इर्द–गिर्द घूमती रही है।[23] बांग्लादेश न केवल दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के लिए अपितु सम्पूर्ण एशिया की व्यापक भू–राजनीतिक गतिशीलता के लिए भी रणनीतिक महत्व रखता है बांग्लादेश की भौगोलिक स्थिति ने देश को भू–रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण बना दिया है।[24] वर्तमान में दक्षिण एशिया अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निमा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले तक विश्व भू–राजनीति में इस क्षेत्र की कोई खास भूमिका नहीं थी। 1947 में भारत और पाकिस्तान स्वतंत्र देशों के रूप में उभरे। इस क्षेत्र ने उपनिवेशवाद व सम्राज्यवाद के खिलाफ अफ्रीकी–एशियाई देशों को एक मंच पर लाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा एशियाई तथा अफ्रीकी देशों जो तात्कालीन विदेशी शासन के अधीन थे, को उपनिवेश से मुक्त कराने के लिए गंभीर प्रयास किए। जिसे तीसरी दुनिया कहा जाने लगा था, उसके विकास में दक्षिण एशिया को अग्रणी रूप में देखा गया था।[25]

दक्षिण एशिया ने विश्व मानचित्र पर अपनी एक खास पहचान बनाई है जिस कारण से यह विश्व की प्रमुख शक्तियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है। दक्षिण एशिया के साथ यह शक्तियों सतत् रूप से जुड़ाव बढ़ा रही है। इसलिए बांग्लादेश अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण क्षेत्रीय तथा विश्व राजनीति भू–राजनीति में महत्वपूर्ण हो गया है।[26]

दक्षिण पूर्व एशिया के लिए एक सेतू के रूप में बांग्लादेश–

भू–राजनीतिक दृष्टि से देखें तो बांग्लादेश विश्व के 2 प्रतिशत से भी कम भू–भाग तथा दक्षिण एशियाई क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा देश है, किन्तु जनसंख्या की दृष्टि से देखा जाए तो यह विश्व की कुल आबादी का 20 प्रतिशत ग्रहण करता है।[27] बांग्लादेश दक्षिण एशिया में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बांग्लादेश की यह अद्वितीय स्थिति इसे दक्षिण एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के बीच एक सेतू बनाने का कार्य करती है। बदलते दक्षिण एशियाई भू–रणनीतिक परिदृश्य में बांग्लादेश का भू–राजनीतिक महत्व मुख्यतः तीन कारकों के कारण बढ़ गया है। पहला तो यह है कि बांग्लादेश तीसरा सबसे बड़ा मुस्लिम अबादी वाला देश है। दूसरा कारक दक्षिण एशिया के सबसे शक्तिशाली देश भारत की भू–रणनीतिक सीमा के भीतर बांग्लादेश स्थितहै तथा तीसरा कारक है बांग्लादेशएशिया की सबसे बड़ी शक्ति अमेरिकाव भारत दोनों के प्रतिद्वंदी चीन से भौगोलिक निकटता, जिसे रणनीतिक माना जाता है।[28] बांग्लादेश सार्क तथा आसियान देशों के बीच भी एक सेतू के रूप में माना जाता है। म्यांमार और अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से निकट होने के कारण बांग्लादेश भारत के लिए भौगोलिक स्थिति दोनों देशों की एकता, अखण्डता तथा सार्वभौमिक सत्ता की रक्षा तथा आर्थिक विकास के लिए सुदृढ़ एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों के लिए आवश्यक है।[29]

वर्तमान परिदृश्य में भारत बांग्लादेश संबंध प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विशेष संदर्भ में–

भारत एक ऐसा देश है जिसने 6 दिसंबर 1971 को बांग्लादेश को एक संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता देने वाले भूटान के साथ पहले देशो में से एक था। यह उल्लेखनीय है कि भारत–बांग्लादेश के साथ 4096.7 किमी० की अपनी सबसे लंबी सीमा साझा करता है, जो समकालीन विश्व की पांचवी सबसे लंबी सीमा है। इसके साथ ही भारत एवं बांग्लादेश के बीच बहुत करीबी सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी और अर्थिक संबंध है जो एक समान ऐतिहासिक विरासत और भौगिलिक निकटता का परिणाम है। इन समानताओं के बावजूद भारत–बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों ने पिछले 50 वर्षों में उतार–चढ़ाव का अनुभव भी किया है। 1975 में बांग्लादेश के राष्ट्रपिता बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान की हत्या न केवल ढाका के लिए बल्कि नई दिल्ली के लिए भी एक गहरा आघात थी। बांग्लादेश स्वतंत्र राष्ट्र के रूप मिली स्वायत्ता का आनंद लेने के लिए उत्सुक था ही कि इसके बाद के वर्षों में एक अलग तरह की राजनीतिक व्यवस्था को देखना पड़ा जो पाकिस्तानी युग के सैन्य शासन की अधिक याद

दिलाती थी। अगले डेढ़ दशक तक चले बांग्लादेश में सैन्य शासन का भी भारत बांग्लादेश संबंधों पर प्रभाव पड़ा। 1990 के दशक के अंत में बांग्लादेश में लोकतंत्र की बहाली के साथ उसकी परिपक्वता और बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था के बीच संबंधों में एक नये युग की शुरूआत की। दोनों देशों के बीच कई विवादों के बावजूद, कई समझौते और आपसी समझ के माध्यम से उनके द्विपक्षीय संबंध एक नई ऊँचाई पर पहुँच गये। भूमि सीमा समझौता एक उत्कृष्ट उदाहण है, जो द्विपक्षीय सहयोग विकसित करने और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिशिचत करने में एक मील का पत्थर है।[30] भारत पहला देश था जिसने बांग्लादेश को एक अलग और स्वंत्रत राज्य के रूप में मान्यता दी और दिसंबर 1971 में अपनी स्वतंत्रता के तुरंत बाद देश के साथ राजनायिक संबंध स्थापित किये। भारत और बांग्लादेश के बीच संबंध इतिहास, संस्कृति, भाषा और देशों के बीच धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और अनगिनत अन्य समानताओं के साझा मूल्यों पर आधारित है। यह संप्रभुता, समानता, विश्वास, समझ और रणनीतिक साझेदारी से कहीं आगे जाती है। पिछले कुछ वर्षों में नये और उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सहयोसग के माध्यम से संबंधों को और मजबूत किया गया है।[31]

भारत–बांग्लादेश संबंध अपने शुरुआती चरण में अत्यंत मैत्री एंव सहयोगपूर्ण रहे हैं। किन्तु उसके बाद संबधो में तनाव उभरता गया। यह तनाव लंबे समय तक बना रहा है। नये दौर में संबधो में भी नयापन आया है। प्रधानमंत्री मोदी ने वर्तमान संबंधों के इस काल को स्वर्ण युग या सोनाली अध्याय की संज्ञा दी है। इस संदर्भ में मोदी ने कहा है–मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पिछले पाँच–छः वर्षों में भारत और बांग्लादेश ने द्विपक्षीय संबंधों का एक सुनहरा अध्याय लिखा है और हमारी साझेदारी को नया आयाम और दिशा दी है। यह दोनों देशों के बीच बढ़ते विश्वास का कारण है कि हम भूमि सीमा और समुद्री सीमा जैसे जटिल मुद्दों को हल करने में सक्षम हैं।[32] वर्तमान में द्विपक्षीय संबंधों के संदर्भ में लुई औगे, युरेपोर्टर के एक लेख में कहते हैं, 'आर्थिक और व्यवसायिक रूप से, दोनों देश तेजी नजदीक होते जा रहे हैं। इसके अलावा साझा नदी के पानी पर बांग्लादेश की निर्भरता दोनों देशो के बीच नाभि संबंधी संबंधों की सदैव उपस्थिति अनुस्मारक बनीहुई है।[33] यह उल्लेखनीय है कि श्री मोदी के शासन काल में संबंधों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ा तो है साथ ही कई वर्षों पुराने विवादों का समाधान भी हुआ है। जो इस प्रकार हैं–

भूमि सीमा समझौता–

भारत–बांग्लादेश भूमि सीमा समझौता (एल०बी०ए०), 1974 दोनों देशों के बीच परिक्षेत्रों के आदान प्रदान का प्रावधान हैं तथा भारत में बांग्लादेश में भारतीय परिक्षेत्रों से लौटने वालों के पुनर्वास के मुद्दे को संबोधित करता है।[34] दोनों देशों के मध्य 2015 को ऐतिहासिक भूमि सीमा समझौते में हस्ताक्षर हुए। भारत–बांग्लादेश के मध्य ये एंक्लेव का विवाद का एक मुख्य कारण रहा है। आखिरकार 2015 को दोनों देशों के बीच एंक्लेव का मुद्दा सुलझा लिया गया। वर्ष 1974 में हस्ताक्षरित ऐतिहासिक भूमि सीमा समीझोते को मई 2015 में भारतीय संसद द्वारा अनुमोदित किया गया। भारत और बांग्लादेश के मध्य सीमा विवाद के इस मुद्दे को हल करने के लिए समझौता हस्तक्षर किए गए। निःसंदेह इस समझौते से दोनों देशों के मध्य संबंधों में मिठास आई है।[35]

समुद्री सीमा का परिसीमन–

हेग स्थित परमानेंट कोर्ट ऑफ एट्रिब्युशन (पी०सी०ए०) ने बांग्लादेश को भारत के साथ बंगाल की खाड़ी में विवादित समुद्री सीमा का 25.602 वर्ग किमी० का क्षेत्र दिया है। संयुक्त राष्ट्र ट्रिब्यूनल के पुरस्कार ने भारत–बांग्लादेश के मध्य क्षेत्रीय समुद्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र और महाद्वीपीय शेल्फ के भीतर और 200 समुद्री मील से समुद्री सीमा रेखा के पाठ्यक्रम को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है।

इस फैसले से बांग्लादेश की समुद्री सीमा को 118,813 वर्ग तक बढ़ा दिया गया है जिसमें 12 एन०एम प्रादेशिक समुद्र और 200 एन०एम० तक ऊँचे समुद्रों में एक विशेष आर्थिक क्षेत्र शमिल हैं। इस फैसले को दोनों देशों द्वारा व्यापक रूप से मैत्रीपूर्ण संबंधों के और सुदृढ़ीकरण के लिए सकारात्मक विकास के रूप में विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र और दक्षिण ऐशियाई उप क्षेत्र के भू–रणनीतिक तथा राजनीतिक महत्व को देखते हुए स्वीकार किया गया है।[36]

सीमा समुद्री विवाद को सुलझाना बेहद आवश्यक था। इस परिसीमन पर बांग्लादेश के विदेश मंत्री महमूद अली ने कहा, यह बांग्लादेश और भारत के बीच दोरती की जीत है। फैसले के बाद दोनों देशों के बीच समुद्री विवाद खत्म हो गया है। उन्होने कहा की फैसला दोनों देशों के बीच संबंधों को एक कदम आगे ले जाएगा।[37]

कनेक्टिविटी–

भारत–बांग्लादेश के मध्य संपर्क के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है जिसमें मुख्य रूप से मैत्रीपुल, रेलवे संपर्क जल तथा नौवहन संपर्क, सड़क और हवाई संपर्क शामिल है। फैनी नदी पर बने 1.9 किमी० का यह पुल त्रिपुरा को बांग्लादेश से जोड़ता हैं। इसी क्रम में बांग्लादेश ने भारत को अपने दो सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाहों– चटगाँव और मोंगला का उपयोग व्यापार तथा लोगों से लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने के लिए उपयोग करने की अनुमति दी है।[38] दोनों देशों ने अंतर्देशीय जल और तटीय शिपिंग व्यापार का उपयोग करके कार्यों की आवाजाही की आपार संभावनाओं को भी रेखांकित किया। सडक संपर्क के संबध में भारत और बांग्लादेश के साथ भूटान व नेपाल सदस्य देशों के बीच सड़क नेटवर्क के माध्यम से माल और यात्रियों की आवाजाही के लिए बी०बी०आई०एन० मोटर वाहन समझौते के शीघ्र संचालन पर सहमत हुए। रेलवे दोनों देशों के बीचकनेक्टिविटी में सुधार के लिए प्रमुख फोकस का एक अन्य क्षेत्र हैं।[39] विश्व बैंक की नई रिर्पोट के अनुसार, भारत और बांग्लादेश के बीच निर्बाध परिवहन संपर्क बांग्लादेश राष्ट्रीय आय को 17 प्रतिशत और भारत उसमें 8 प्रतिशत तक बढ़ाने की क्षमता रखता है।[40] वर्तमान समय में दोनो देशों के मध्य व्यापार और आवागमन हेतू लगभग सभी साधनों जैसे शिपिंग, रेल, बस और हवाई जहाज आदि का प्रयोग किया जा रहा है।

रक्षा सहयोग–

भारत–बांग्लादेश संबंधों में रक्षा एवं सुरक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है। दोनों देशों में नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास, प्रशिक्षण तथा क्षमता निर्माण होता रहता है। दोनों देशों की रक्षा सेवाएं अब संयुक्त अभ्यास, चिकित्सा सहायता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी भाग ले रहीं हैं। आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए दोनों देशों की सेनाओं के बीच संयुक्त अभ्यास अभियान संपति ने 7 राउंड पूरे कर लिए हैं।[41] रक्षा सहयोग के क्षेत्र में भारत द्वारा बांग्लादेश को रक्षा आयात के लिए 500 मिलियन डॉलर का लाइन ऑफ क्रेडिट दिया गया है। साल 2021 की शुरुआत में, 122 सदस्यीय बांग्लादेशी त्रि–सेना दल ने गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लिया था। इसके अलावा दोनों देशों की सेवा के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास, प्रशिक्षण तथा क्षमता निर्माण होता है तथा भारतीय सशस्त्र बलों के प्रमुखों के लिए बांग्लादेश का दौरा करना नियमित प्रथा है।[42] सुरक्षा सहयोग के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच अ द्वितीय संबंध है। सर्वोच्च स्तर पर बांग्लादेश के नेतृत्व में आश्वासन दिया है कि भारत को नुकसान पहुँचाने के लिए किसी को भी बांग्लादेश का भू–भाग का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। सुरक्षा सहयोग के लिए लगभग सभी कारकों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह द्विपक्षीय रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए अच्छी पहल है।[43]

आर्थिक संबंध–

पिछले एक दशक में विशेष रूप से बांग्लादेश भारत द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों ने पारंपरिक संबंधों को मजबूत करने के साथ एक क्षेत्र में प्रवेश किया है तथा आगे बढ़ाने की साझेदारी को गहरा और व्यापक बनाने की नींव रखी जा रही है।[44] बांग्लादेश पर दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। पिछले एक दशक में भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार में लगातार वृद्धि हुई है। बीते एक दशक में भारत और बांग्लादेश के बीच द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि हुई है। वित वर्ष 2018–19 में बांग्लादेश को भारत का निर्यात 9.21 अरब डॉलर था और आयात 1.04 अरब डॉलर था। इसके साथ ही भारत द्वारा पिछले आठ वर्षों में बांग्लादेश को सड़कों, रेलवे, शिपिंग और बंदरगाहों सहित विभिन्न क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए आठ अरब डॉलर की तीन लाइन ऑफ क्रेडिट का विस्तार किया है बांग्लादेश भारत के रियायती एलओसी का सबसे बड़ा प्राप्त कर्ता है। भारत अखौर अगरतला रेल लिंक के निर्माण, अंतर र्देशीय जलमार्ग के ड्रेजिट और भारत–बांग्लादेश मैत्री पाइपलाइन के निर्माण सहित विभिन्न बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के लिए भी बांग्लादेश को अनुदान प्रदान करता है।[45]

भारत–बांग्लादेश के मजबूत संबंधों की राह में चुनौतियाँ–

भारत और बांग्लादेश के मध्य ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा विकास भागीदार है। बांग्लादेश दक्षिण एशिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यस्थाओं में से एक है तथा रणनीति रूप से पूर्वोत्तर राज्यों तक भारत की पहुँच के लिए महत्वपूर्ण है। भारत–बांग्लादेश संबंध पिछले एक दशक में काफी मजबूत हुए हैं। दोनों देशों ने तीखे सीमा विवाद को हल करने में सफलता हासिल की है। वहीं वर्ष 2014 में समुद्री सीमा विवाद भी हल किया जा चुका है। किन्तु अब भी कई मुद्दे ऐसे है। जो दोनों देशों के बीच तनाव का कारण बने हुए है। कुछ विवाद हैं, जो दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों के लिए चुनौतियां बनी हुई हैं। जिसमें तीस्ता नदी जल विवाद, भारत के नागरिकता संशोधन विधेयक सीएबी को लेकर दोनों के बीच मतभेद तथा चीन कारक मुख्य है। इन मुद्दों को हल करना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए एक बड़ी चुनौती है। भारत–बांग्लादेश के मध्य विवादित मुद्दों का संक्षेप में वर्णन किया गया है जो अग्रलिखित है–

तीस्ता जल विवाद–

तीस्ता नदी, ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी है जो कांगसे ग्लेशियर से निकलती है तथा बांग्लादेश में प्रवेश करने से पहले सिक्किम व पश्चिम बंगाल से होकर बहती हैं। यह 1947 से संघर्षरत हुई है जब तीस्ता के जलग्रहण क्षेत्रों को भारत को आवंटित किया गया था। 1972 में भारत–बांग्लादेश संयुक्त नदी आयोग की स्थापना के बाद वर्ष 1983 में तीस्ता के पानी के बंटवारे पर एक तदर्थ व्यवस्था की गई, जिसमें भारत को 39 प्रतिशत पानी और बांग्लादेश को 36 प्रतिशत पानी मिला। वर्ष 1996 में गंगाजल संधि के बाद तीस्ता नदी का मुद्दा महत्वपूर्ण हो गया।[46] तीस्ता नदी सिक्किम के लगभग पूरे बाढ़ के मैदानों को कवर करती है तथा बांग्लादेश के 2,800 वर्ग कि मी० क्षेत्र में बहकर हजारों लोगों के जीवन को नियंत्रित करती है। ठीक इसी प्रकार पश्चिम बंगाल के लिए भी तीस्ता इतनी ही महत्वपूर्ण है तथा इसे उत्तरी बंगाल के आधे दर्जन जिलों की जीवन रेखा माना जाता है। बांग्लादेश ने 1996 की गंगा जलसंधि की तर्ज पर भारत से तीस्ता जल के समान वितरण की मांग की, किन्तु बात नही बन पायी।[47] कई वर्ष पुराने इस मुद्दे का अबतक कोई स्थायी समाधान नही हो पाया है।

नागरिकता संशोधन विधेयक तथा राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर का भारत–बांग्लादेश संबंधो पर प्रभाव–

04 दिसंबर, 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नागरिकता संशोधन विधेयक को मंजूरी दी, जो की भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण संशोधन और प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है। इस अधिनियम द्वारा छः धार्मिक समुदायों के सदस्यों को भारतीय नागरिकता की अनुमति देने का प्रयास किया गया है। वे धार्मिक समुदाय हिंदू सिख, बौद्ध, जैन, पारसी तथा ईसाई हैं जो की पड़ोसी मुस्लिम बहुल देशों जैसे–पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से उत्पीड़न या डर के कारण पलायन कर गए हैं। उसी समय नागरिकता संशोधन अधिनियम को जब राष्ट्रीय नागरिक राजिस्टर (एन०आर०सी०) के साथ पढ़ा गया, तो पूरे देश में विशेष रूप से असम में व्यापक विरोध हुआ। इस संशोधन द्वारा जाने–अनजाने में अफगानिस्तान, बांग्लादेश तथा पाकिस्तान को उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों के मूल रूप से पहचान कर धर्मिक हमलावरों के रूप में इन देशों की भूमिका को संस्थागत रूप दिया। यह अच्छे संबंध बनाये रखने के लिए एक ठोस आधार नहीं था तथा प्रधानमंत्री मोदी की पड़ोसी प्रथम नीति के विरूद्ध साबित हुई।[48] सी०ए०ए० व एन०आर०सी० द्वारा दोनों देशों के संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई है। इससे संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी द्वारा प्रधानमंत्री हसीना को भारतीय कठपुतली करार दिया गया था उदारवादी व अवामी लीग के समर्थक इस बात से नाराज है कि भारत हिंदुओं के विरुद्ध धार्मिक भेदभाव और धर्म निरपेक्ष साख पर जोर दिया है।[49]

चीन कारक–

भारत–बांग्लादेश संबंधों में चीन एक कारक के रूप में उभरा है जो दोनों देशों के बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों के लिए एक चुनौती है। बांग्लादेश की भौगोलिक स्थिति तथा दक्षिण एशिया में एक मजबूत भागीदार के रूप में बांग्लादेश की भूमिका भारत के लिए सदैव महत्वपूर्ण रही है तथा बांग्लादेश के साथ मजबूत द्विपक्षीय संबंध बनाना भारत के लिए आवश्यक भी है। ऐसे में यदि बांग्लादेश का रुख चीन जिसके साथ भारत की तनातनी है, की तरफ होता है तो यह भारत के लिए आवश्यक ही चिंता का विषय है। बांग्लादेश लगातार चीन से अपने रिश्ते बनाने की कोशिश में रहता है। बांग्लादेश चीन का दूसरा सबसे बड़ा हथियार निर्यात गंतव्य है। चीनी कंपनियां

बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में अपने भारतीय समकक्षों से आगे निकल रही है।[50] चीन के बांग्लादेश के साथ पहले से ही मजबूत संबंध है। चीन ने अपनी महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड पहल के हिस्से के रूप में बांग्लादेश में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 38 बिलियन डॉलर देने का वादा किया है। इसके साथ ही चीन बांग्लादेश का सैन्य हार्डवेयर का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता और सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार भी है। भारत ने कुछ चिंता के साथ बांग्लादेश में चीन के बढ़ते पदचिन्ह की बारीकी से निगरानी की है, लेकिन हसीना सरकार ने अब तक दोनों क्षेत्रीय शक्तियों के साथ संबंधों को संतुलित करने में महान कौशल दिखाया है। इसने भारत को बार–बार आश्वासन दिया है कि वह चीन को सैन्य उद्देश्यों के लिए अपने बंदरगाहों का उपयोग नहीं करने देगा।[51]

भारत–बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों में सहयोग के अवसर

भारत–बांग्लादेश संबंधों में काफी उतार–चढ़ाव के बाद पिछले एक दशक से घनिष्ठ साझेदारी और गहन सहयोग की ओर एक उल्लेखनीय बदलाव देखा जा रहा है। दविपक्षीय संबंधों के बदलते परिदृश्य में अर्थव्यवस्था, राजनीतिक अर्थव्यवस्था तथा भू–रणनीति के क्षेत्र में आपेक्षित विकास हुआ है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत और द्विपक्षीय परियोजनाओं को बढ़ावा देने में दोनों देशों ने अभूतपूर्व प्रगति की है तथा दोनों देशों में सहयोग के स्तर को बढ़ाने और द्विपक्षीय साझा विकास को बढ़ावा देने की प्रबल इच्छा है। हालांकि दोनों देशों को अब नई परिस्थितियों, नयेकार्यों तथा सहयोग के मामले में नई आवश्यकताओं का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन यह एक नया ऐतिहासिक अवसर भी है।[52] भारत–बांग्लादेश के मध्यकुछ चुनौतियों के बावजूद दोनों देशों ने संबंधों को मजबूत करने में उल्लेखनीयभूमिका निभाई है। जून 2016 में प्रधानमंत्री मोदी की बांग्लादेश यात्रा तथा 2017एवं 2019 में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना की दिल्ली यात्रा, संबंधों केनिर्माण में ऐतिहासिक घटनाएं थी। 17 दिसंबर 2020 को, आर्टिफिशियलइंटेलिजेंस, बाहरी अंतरिक्ष और नवीकरण ऊर्जा जैसे नये क्षेत्रों में द्विपक्षीयसंबंधों के विस्तार की संभावना तलाशते हुए एक आभासी शिखर सम्मेलनआयोजित किया गया था। वर्तमान में द्विपक्षीय सहयोग के 19 साधन मौजूद हैं, जिससे संबंध एक परिपक्व विश्वास के रूप में विकसित हैं। इसके अलावादक्षिण एशिया में बांग्लादेश दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहाहै। अवसरों का लाभ उठाने के लिए व्यापार तथा निवेश के क्षेत्र में उनके प्रयासों से तालमेल बिठाना महत्वपूर्ण है। जिससे पारस्परिक लाभ होगा।[53]कोविड 19 महामारी के दौरान द्विपक्षीय सहायता के रूप में भारत सरकार ने 30,000 सर्जिकल मास्क 15,000 हेडकबर 50.000 सर्जिकल लेटेक्स दस्ताने 100,000 हाइड्रोक्सिक्लारो क्वीन दवा और आरटी–पीसीआर परिक्षण किट दिये। भारत सरकार बांग्लादेश के स्वास्थ्य पेशेवरों को कोविड रोगियों के उपचार और देखभाल करने के लिए विभिन्न ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल भी संचालित कर रही है। 21 जनवरी, 2021 में भारत सरकार ने महामारी से लड़ने के अपने प्रयासों में सहयता करने के लिए बांग्लादेश को दो मिलियन कोविशील्ड ऑक्सफॉर्ड एस्ट्राजेनेका टीके उपहार में दिए।[54]

द्विपक्षीय सहयोग को गहरा करने के हाल के प्रयासों को माल सेवाओं और उर्जा में व्यापार को बढ़ावा देने सहित कई क्षेत्रों में पहल द्वारा रेखांकित किया गया है जिसमें मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी स्थापित करना बुनियादी ढांचे का निर्माण सीमा पार निवेश को प्रोत्साहित करने की पहल और विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण के क्षेत्रों में सहयोग आदि प्रमुख है वर्तमान में बांग्लादेश में बड़ी संख्या में परियोजनाएं लागू की जा रही है, जिसमें से कई को भारत के द्वारा 8 मिलियन डॉलर की तीन लाइन ऑफ क्रेडिट (एलओसी) द्वारा वित्त पोषित किया जा रहा है। भारत से ऊर्जा आयात, बांग्लादेश की परमाणु ऊर्जा संयंत्र के निर्माण में भारत की भागीदारी, पद्मा पुल के लिए प्रदान किया गया अनुदान, बांग्लादेश में भारतीय निवेशकों के विशेष आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण, तटीय नौवहन समझौते पर हस्ताक्षर, बांग्लादेश के मोंगला, चट्टोग्राम और पायरा बंदरगाह का उपयोग करने के लिए भारत के माध्यम से नेपाल औरभूटान को गमन सुविधाओं की अनुमति देना। बांग्लादेश–भूटान–भारत–नेपाल (बीबीआईएन) मोटर वाहन समझौते पर हस्ताक्षर और अन्य पहल इस समय व्यापार और व्यापार कनेक्टिविटी के अन्य क्षेत्रों के संचालन के तरीके में बदलाव की शुरुआत कर सकते हैं। बांग्लादेश इन्हें ऐसे अवसरों के रूप में मानता है जिनका उपयोग इसके लिए तुलनात्मक लाभों को प्रतिस्पर्धात्मिक लाभों में बदलने के लिए किया जा सकता है।[55]

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1]. एम0ई0ए0 रिर्पोट (मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटरनल अफेयर्स) ऑन इन्डो बांग्लादेश रिलेशन्स जुलाई–2014https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Bangladesh_July_2014_pdf
[2]. पूर्वोक्त
[3]. द् प्रिंट (2023, फरवरी, 01) एवर स्टेथनिग इंडिया बांग्लादेश रिलेशन्स https://theprint.in/world/ever-strengthening-india-bangladesh-relations/1348650/
[4]. राशिद, हारून एर. (2019). जियोग्राफी ऑफ बांग्लादेश. राउटलेज, पृ0स0 10–20
[5]. बम्मी, वाई0 एम0. (2010). इंडिया बांग्लादेश रिलेशनसः द् वे आहिड. विज बुक्स इंडिया प्रा0 लि0. पृ0सं0 1–3
[6]. बेंक्सटर, क्रैग. (2018). बांग्लादेश. फ्रॉम ए नेशन टू ऐ स्टेट. राउटलेज, पृ0सं0 1–5
[7]. अहमद, सलाउद्दीन. (2004). बांग्लादेशः पास्ट एण्ड प्रेजेंट. ए0 पी0 एच0 पाब्लिशिंग, पृ0सं0 23–24
[8]. आजाद, मीर मोहम्मद, हसन एमडी0 मेहेदी एण्ड कमालुद्दीन मोहम्मद. (2016). ए कल्चर एनालिसिस ऑफ बांग्लादेश इंपैक्ट ऑन नेटिव पीपल एण्ड फॉरर्नर. इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेस एण्ड सोशल साइंस इंपैक्ट फेक्टर, वॉल्यूम 3, इश्यू 6 https://www.researchgate.net/publication/321070577_A_CULTURE_ANALYSIS_OF_BANGLADESH_IMPACT_ON_NATIVE_PEOPLE_FOREIGNERS
[9]. अहमद (2004)
[10]. सेनगुप्ता, नितिश के. (2011). लैण्ड ऑफ टू रीवर्सः ए हिस्ट्री ऑफ बंगाल फ्रॉम द महाभारत टू मुजीव. पेंग्विन बुक्स इंडिया
[11]. बम्मी (2010)
[12]. पूर्वोक्त
[13]. ओमान ऑब्जर्वर. (2023, मार्च 28). द हिस्ट्री ऑफ इस्लाम इन बांग्लादेश एंड देअर रमजान ट्रेडिशनस् https://www.omanobserver.om/article/1134819/features/culture/the-history-of-islam-in-bangladesh-and-their-ramadhan-traditions
[14]. अहसान, अब्दुला अल.(1994). स्प्रेड ऑफ इस्लाम इन प्री–मुगल बंगााल इंटेलेक्चुअल डिस्कोर्स, वाल्यूम 22, नं01. पृ0सं0 55
[15]. बम्मी (2010)
[16]. पूर्वोक्त
[17]. डॉ0 प्रतिमा. (2018). भारत–बांग्लादेश संबंध : बदलते परिप्रेक्ष्य, उभरते आयाम. अंकित पब्लिकेशन्स्
[18]. अमृत, सुनील एल0. (2013). क्राकिंग द वे ऑफ बंगालः दॅ फ्यूरीज ऑफ नेचर एंड द् फॉरच्यून ऑफ माइग्रेंटस. हॉवर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, पृ0सं0 24
[19]. द् डेली स्टार. (2011) अक्टूबर 15). बांग्लादेश एंड इंडियास नॉर्थईस्टः ए सिक्योरिटी पर्सपेक्टिव https://www.thedailystar.net/news-detail-206537
[20]. हिन्दुस्तान टाइम्स. (2011. अक्टूबर 15). इंडियास नॉर्थईस्टः गेटवे टू कनेक्टिविटी विद ईस्टर्न नेबरस् https://www.hindustantimes.com/ht-insight/international-affairs/indias-northeast-gateway-to-connectivity-with-eastern-neighbours-101681710706414.html
[21]. कबीर, आशिक. इंडो–बांग्लादेश रिलेशन्सः इन द कंटेक्स्ट ऑफ नार्थ–ईस्ट इंडिया https://www.academia.edu/28278235/Indo-Bangladesh_relations_In_the_context_of_North_East_India
[22]. अहमद, काजी फहीम, (2023 अगस्त 31). वाय इज बांग्लादेश इंम्पोटेन्ट टू इंडिया ?. द् लंदन ग्लोबलिस्ट.https://thelondonglobalist.org/why-is-bangladesh-important-to-india/

[23]. अशरत, समारा. (2023 जनवरी 23). वाय इंडो बांग्लादेश टाईज आर क्रुशियल फॉर इंडियाज नॉर्थ–ईस्टर्न केनेक्टिविट.https://www.counterview.net/2023/01/why-indo-bangladesh-ties-are-crucial.html?m=1

[24]. मुनि, एस0 डी0. (2003). साउथ एशिया एज ए रीजन. साउथ एशियन जर्नल, अगस्त–सितंबर 2003

[25]. पटनायक, स्मृति एस. (2012) फोर डिकेड्स ऑफ इंडिया–बांग्लादेश रिलेशन्सः हिस्टोरिकल एम्पेरटिव एंड फ्यूचर डायरेक्शन इंस्टिट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एण्ड एनालिसिस, नई दिल्ली.

[26]. हार्जेटी, डेविन टी. (2005). साउथ एशिया इन द् वर्ल्ड पॉलिटिक्स, रोमेन एण्ड लिटिलफील्ड

[27]. पटनायक (2012)

[28]. अफ्रोज, शाहीन एण्ड अजाद, अबुल कलाम. (2007) स्ट्रक्चरल एण्ड सिस्टमैटिक अस्पेटस ऑफ नेशनल सिक्योरिटी, इन उसमानी मफले आरे एडिशन, विद नेशनल सिक्योरिटी बांग्लादेश, नं0 12 पृ0सं0 23

[29]. ब्रिग0 जेन0 सेखावत हुसैन. एन0 डी0 सी0. पी0 एस0 सी0 (रिटा0).(2006. फरवरी, 19). जियो–स्ट्रेटेजिक इर्म्पोटेन्स ऑफ बांग्लादेश, द डेली स्टार,

[30]. डॉ0 प्रतिमा (2018)

[31]. ओ0 आर0 एफ0. (2021 मार्च 25). 50 ईयर्स ऑफ इंडिया बांग्लादेश रिलेशन्स मेकिंग मेचुरिटी. https://www.orfonline.org/expert/speak/50-Years-of-India-bangladesh-relations-making-maturity/?amp

[32]. एम0ई0ए0 रिर्पोट्स ऑन इंडो–बांग्लादेश रिलेशन्श, 2017 https://mea.gov.in/Portal/Foriegn/realtions/Bangladesh_September_2017_en_pdf

[33]. द् हिन्दू (2020, मार्च 18). इंडिया बांग्लादेश हैव क्रियटेड ए गोल्डन चैप्टर ऑफ म्युचअल रिलशनस्ः पीएम मोदी https://www.aninews.in/news/world/asia/pm-modis-visit-to-bangladesh-to-bolster-bilateral-ties-says-report20210323152143/

[34]. ए0एन0आई0. (2021, मार्च, 23). पीएम मादीस विजिट टू बोल्स्टर बाइलेटेरल टाइज सेज रिपोर्ट. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=159233

[35]. प्रेस इन्फोरमेशन ब्यूरो, गवर्मेंट ऑफ इंडिया, मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स. (2017, मार्च 15). इंडिया बांग्लादेश लेंड बाउंड्री अग्रीमेंट https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=159233

[36]. सरदार. संजीव. (2021). हिस्ट्री ऑफ एक्लेज बिटवीन इंडिया एंड बांग्लादेश एंड फ्यूचर चैलेंजेज ऑफ रिहैबिलिटेशन. द् जर्नल ऑफ ऑरिएंटल रिसर्च मद्रास, वाल्यूम XCII-I पृ0सं0 273–86

[37]. भट्टाचार्जी, रूपक (2014, अगस्त, 19). डिलिमिटेशन ऑफ इंडो–बांग्लादेश मेरी टाइम बाउंड्री, आई0डी0एस0ए0https://www.idsa.in/idsacomments/DelimitationofIndo-Bangladesh_rbhattacharjee_190814

[38]. द् हिन्दू (2014, जुलाई, 09). बांग्लादेश विनस मैरीटाइम डिस्पयूट विद इंडिया https://www.thehindu.com/news/national/bangladesh-wins-maritime-dispute-with-india/article6191797.ece

[39]. द् प्रिंट. (2021, मार्च, 12). इंडिया बांग्लादेश बिल्ड स्ट्राँगर कनेक्टिविटी एज दिल्ली लुक्स एम्ब्रॅस, ढाका इन इन्डो पैसिफिक. https://theprint-in.cdn.ampproject.org/v/s/theprint.in/diplomacy/india-bangladesh-build-stronger-connectivity-as-delhi-looks-to-embrace-dhaka-in-indo-pacific/620146/?amp=&amp_gsa=1&amp_js_v=a9&usqp=mq331AQIUAKwASCAAgM%3D#amp_tf=From&ampshare=https%3A%2F%2Ftheprint.in%2Fdiplomacy%2Findia-bangladesh-build-stronger-connectivity-as-delhi-looks-to-embrace-dhaka-in-indo-pacific%2F620146%2F

[40]. फर्स्टपोस्ट. (2019, अक्टूबर, 07). इंडिया, बांग्लादेश साइन सेवन पैक्टस ड्यूरिंग शेख हसीनाज विजिटः कोस्टल सरविलांस, रीवर वॉटर शेयरिंग इंप्रुविंग कनेक्टिविटी अमंग की टेकअवेज. https://www.firstpost.com/india/india-bangladesh-sign-seven-pacts-during-sheikh-hasinas-visit-coastal-surveillance-river-water-sharing-improving-connectivity-among-key-takeaways-7464291.html

[41]. वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट. (2021, मार्च, 09). सीम्सलैस ट्रांसपोर्ट कनेक्टिविटी केंन क्रियेट सिग्नीफिकेंट इकोनॉमिक गेंस फॉर बांग्लादेश एण्ड इंडिया https://www.worldbank.org/en/news/press-release/2021/03/09/seamless-transport-connectivity-can-create-major-economic-gains-for-bangladesh-and-india#:~:text=DHAKA%20and%20NEW%20DELHI%2C%20March,a%20new%20World%20Bank%20report

[42]. जोयिता भट्टाचार्जी. (2023, अगस्त, 21). इंडिया–बांग्लादेश डिफेन्स कॉपेरशन कमिंग ऑफ ऐज, एट लास्ट. ओ आर0 एफ0http://20.244.136.131/research/india-bangladesh-defence-cooperation-coming-of-age-at-last

[43]. सिद्दीकी. (2021, मार्च 25). पीएम मोदी विलिट बांग्लादेशः डिफेन्स सिक्योरिटी, कल्चर कनेक्टिविटी एण्ड एंफ्रा टू बी द् फोकस डिस्कशन. फाइनेशियल एक्सप्रेस. https://www.financialexpress.com/business/defence-pm-modi-to-visit-bangladesh-defence-security-culture-connectivity-and-infra-to-be-the-focus-discussion-2220204/

[44]. रहमान, मुस्ताफिजूर. (2021, अप्रैल 09). बांग्लादेश–इंडिया इकोनॉमिक टाइजः अड्रेसिंग द् नेक्स्ट जेनेरेशन ऑफ चैलेंजेस. द् डेली स्टार https://www.thedailystar.net/opinion/news/bangladesh-india-economic-ties-addressing-the-next-generation-challenges-2074361

[45]. चौधरी, दीपांजन रॉय, (2020 जुलाई). इंडिया प्लान्स टू एनहैन्स ट्रेड विद बांग्लादेश द् इकोनॉमिक टाइम्सhttps://m.economictimes.com/news/economy/foreign-trade/india-plans-to-enhance-trade-with-bangladesh/amp_articleshow/76881534.cms

[46]. बनर्जी, अनुत्तमा. (2021, अप्रैल 09). इंडिया मस्ट सैटल द तीस्ता रीवर डिस्टयूठ विद् बांग्लदेश फॉर लास्टिंग गेंस द् डिप्लोमेटhttps://thediplomat.com/2021/04/india-must-settle-the-teesta-river-dispute-with-bangladesh-for-lasting-gains/

[47]. बाग्ची, सुवोजीत. (2017, अप्रैल 08) व्हाट इज द् लोडउन ऑन शेयरिंग ऑफ तीस्ता वॉटरस ? द् हिन्दू https://www.thehindu.com/news/international/the-hindu-explains-teesta-water-sharing/article17894299.ece

[48]. ओभान, गुंताश, इंडियाज नेबरहूड फर्स्ट पोलिसीइन द् बैकड्रोप ऑफ सी0ए0ए0– एन0आर0सी0 इफैक्ट ऑन इंडिया बांग्लादेश टाइज इन ए ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड, इंटरनैशनल जर्नल ऑफ पॉलिसी साइंस एंड लॉ वाल्यूम–1, इश्यू–2, पृ.सं. 637–647

[49]. खासरू, सयैद मुनीर. (2020, दिसम्बर 10), 49 ईयर्स ऑन इंडिया बांग्लादेश शुड डील विद अनरिजोवड् इश्यू, हिन्दूसतान टाइम्स https://www.tribuneindia.com/news/comment/caa-nrc-move-triggers-disquiet-in-dhaka-35884

[50]. आर्यमान, भटनागर. (2020 मार्च 23), इंडियाज बांग्लादेश चेलैंजेज, आई0 पी0 एस0 https://www.ips-journal.eu/regions/asia/indias-bangladesh-challenge-4181/

[51]. पूर्वोक्त

[52]. डेकाई, हूवांग लाइफ झू एण्ड याओं, वांग, (2018, सितंबर 30). न्यू अपोर्च्यूनिटीज फॉर इंडिया–बांग्लादेश कोपरेशन, द् डेली स्टार https://www.thedailystar.net/opinion/perspective/news/new-opportunities-india-bangladesh-cooperation-1640425

[53]. वशिष्ठ, छवि, (2021, जनवरी 21), डिस्कशन ऑन इंबडया बांग्लादेश रिलेशन्सः अपोर्च्यूनिटीज एंड चैलेजेंस–बी0आई0 एफ0https://www.vifindia.org/event/report/2021/february/02/discussion-on-india-bangladesh-relations-opportunities-and-challenges

[54]. एम0ई0ए0 रिपोर्ट ऑन इंडिया–बांग्लादेश रिलेशन्स, (2021, मार्च 09)https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/India_Bangladesh_bilateral_brif.pdf

[55]. मुस्ताफिजूर, (2021, मार्च 25), बांग्लादेश–इंडिया टाइज– टाइम टू सीज द् अपोर्च्यूनिटीज, ओ0आर0एफ0, https://www.orfonline.org/expert-speak/bangladesh-india-ties-time-seize-opportunities/?amp